आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 10 जून, 2023 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

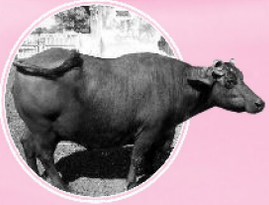

कुलपति सन्देश

लघु व सीमान्त पशुपालकों से राजस्थान दूध उत्पादन में प्रथम

विश्व दुग्ध दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं व बधाई।

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुपालन का विशेष महत्व है। पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास और स्थिर आय में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में लगभग दो करोड़ लोग आजीविका के लिए पशुपालन पर आश्रित है। पशुपालन क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 4 प्रतिशत का योगदान करता है। लघु सीमान्त व भूमिहीन किसानों की आय का प्रमुख स्त्रोत पशुपालन है। सुखा, बाढ़ व प्राकृतिक आपदाओं के समय किसानों को निश्चित व लगातार आय का प्रमुख स्त्रोत भी पशुपालन ही है। भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है। यह बड़ी खुशी की बात है कि राजस्थान भी देश में सबसे अधिक दूध उत्पादन करने वाला राज्य बन गया है। यह लघु व सीमान्त पशुपालकों की मेहनत का नतीजा है। इसके लिए मैं सभी को बधाई देता हूँ। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दूध को एक पूर्ण संतुलित आहार माना है। भारत में माँ व गाय के दूध को अमृत की संज्ञा दी है। मानव अथवा पशु के जीवन का पहला भोजन दूध ही होता है जो जीवन पर्यन्त अच्छे स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। लगभग आम लोगों की दिनचर्या भी दूध से शुरू होती है दूध के महत्व को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन ने हर वर्ष एक जून को विश्व दुग्ध दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की। विश्व दुग्ध दिवस का आयोजन की शुरूआत आज से 23 वर्ष पूर्व वर्ष 2001 में की गई थी। यह दिवस विशेष रूप से दूध व डेयरी से जुड़े अन्य उत्पादों की उपयोगिता को जन–जन तक पहुंचाने के लिए मनाया जाता है। विश्व दुग्ध दिवस–2023 की थीम ''एन्जाय डेयरी'' है। डेयरी क्षेत्र स्थिरता, आर्थिक विकास, पोषण और आजीविका में महत्वपूर्ण योगदान देता है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर भी विश्व दुग्ध दिवस–2023 धूमधाम से मनाने जा रहा है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयों द्वारा विभिन्न कार्यक्रम जैसे गोष्ठीयां, प्रशिक्षण, प्रतियोगिताएं आयोजित कर डेयरी के महत्व, दूध की उपयोगिता व पोषण लाभों के बारे में जन–जन को जागरूक करने जा रहा है। विश्व दुग्ध दिवस के अवसर पर पशुपालन क्षेत्र से जुड़े सभी पशुचिकित्सकों, पशुचिकित्सा कार्मिकों, पशुपालक व किसान भाईयों को पुनः शुभकामनाएं व बधाई।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

माननीय राज्यपाल, राजस्थान एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र को विश्वविद्यालय की प्रगति से अवगत करवाते हुए कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

कुलपति प्रो. गर्ग ने माननीय राज्यपाल से की शिष्टाचार भेंट

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने 4 मई को राजस्थान के माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र से शिष्टाचार भेंट की एवं विश्वविद्यालय की पशुचिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा, प्रसार एवं अनुसंधान प्रगति से अवगत करवाया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गर्ग ने राज्यपाल श्री कलराज मिश्र को विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों के हितार्थ आयोजित किये जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों, तकनिकी हस्तांतरण, नवीन अनुसंधान के साथ–साथ विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रगति, वित्तीय सुदृढ़ीकरण एवं भविष्य की कार्य योजनाओं के बारे में बताया। कुलपति प्रो. गर्ग ने विश्वविद्यालय में शिक्षकों की कमी के चलते शैक्षणिक गुणवत्ता पर प्रभाव के बारे में भी कुलाधिपति महोदय को अवगत करवाया। कुलपति ने कहा की राजुवास अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता से प्रदेश में पशुचिकित्सा को स्वावलम्बन की ओर तथा विद्यार्थियों को शैक्षणिक विकास के अवसर प्रदान करने के लिए दृढ़ संकल्प है। राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र ने विश्वविद्यालय की आशातीत प्रगति पर प्रसन्ता प्रकट की एवं विश्वविद्यालय परिवार को छठे दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन हेतु बधाई दी। इस अवसर पर राज्यपाल के विशेषाधिकारी श्री गोविन्द जायसवाल भी मौजूद रहे।

पशु विज्ञान केन्द्र जालौर के भवन का लोकार्पण

पशुपालन किसानों की आर्थिक स्वावलम्बन का प्रमुख आधार : पशुपालन मंत्री लालचंद कटारिया

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुविज्ञान केन्द्र, रामसीन (जालौर) के नवनिर्मित भवन का 3 मई को ऑनलाईन लोकार्पण कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य विभाग के मंत्री श्री लालचन्द कटारिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने विश्वविद्यालय व राज्य के पशुपालकों को बधाई देते हुए कहा कि राजस्थान पशुधन बाहुल्य प्रदेश है पशुपालन पशुपालकों की आजीविका का मुख्य आधार है। जलवायु की विषम परिस्थितियाँ में पशुपालन ही किसानों की आर्थिक स्वावलम्बन का प्रमुख आधार है। उन्होंने पशुपालकों हितार्थ राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं पशुधन निशुल्क अरोग्य योजना, मुख्यमंत्री कामधेनु बीमा योजनाओं आदि का लाभ उठाने हेतु अनुरोध किया। मंत्री महोदय ने लम्पी रोग से मृत्यु पर पशुपालकों को 40,000 की आर्थिक सहायता तथा 1439 ग्राम पंचायतों में पशुचिकित्सा उपकेन्द्र खोले जाने की बात कही। श्री कटारिया जी ने कहा कि विश्वविद्यालय शोध एवं प्रसार के क्षैत्र में अग्रणी कार्य कर रहा है इस नवीन पशुविज्ञान केन्द्र के खुल जाने से जिले के पशुपालकों को नवीन तकनीकों के हस्तान्तरण, प्रशिक्षण एवं पशुरोग निदान सेवाओं का लाभ मिल सकेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने विश्वविद्यालय की प्रसार गतिविधियों विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम, रोग निदान सेवाए, टोल फ्री हेल्प लाईन सर्विस, गोबर–गोमूत्र प्रसंस्करण आदि के बारे में जानकारी प्रदान की। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि पशु विज्ञान केन्द्रों एवं विश्वविद्यालय में अन्य इकाईयों द्वारा पशुपालकों का कौशल विकास किया जा रहा है। विश्वविद्यालय गांव–ढाणी तक बैठे पशुपालकों हेतु नवीन तकनीकों के हस्तातरण, प्रशिक्षण, सलाहकारी एवं रोग निदान सेवाएं उपलब्ध करवा रहा है। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो राजेश कुमार धूड़िया ने पूरे कार्यक्रम का संचालन किया एवं कार्यक्रम के अंत में सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दौरान "पशुपालन नये आयाम" त्रैमासिक पुस्तिका के नवीन अंक का डिजीटल विमोचन भी किया गया। लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान कुलसचिव बिन्दु खत्री, वित्त नियन्त्रक बी.एल. सर्वा सहित विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर मौजूद रहे। पशु विज्ञान केन्द्र जालौर के कार्यकारी प्रभारी डॉ. राजेश सिघांटिया व बड़ी संख्या में केन्द्र पर पशुपालक उपस्थित रहे।

प्रबंध मण्डल की 30वीं बैठक का आयोजन

पैरा वेटरनरी शिक्षा निदेशालय की स्थापना करेगा वेटरनरी विश्वविद्यालय : कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 30वीं प्रबंध मंडल की बैठक 23 मई को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई। बैठक में विश्वविद्यालय शिक्षकों एवं कर्मचारियों हेतु राज्य सरकार के निर्देशानुसार पुरानी पेशंन योजना लागू करने का अनुमोदन किया गया। प्रबंध मण्डल सदस्यों ने राज्य सरकार के सभी दिशा निर्देशो की पालना करते हुए कर्मचारियों के भविष्य हितों एवं पेंशन विकल्पो को ध्यान रखते हुए उचित निर्णय लेने का सुझाव दिया। पैरा वेटरनरी शिक्षा निदेशालय की स्थापना के प्रस्ताव को भी बैठक में सैद्धान्तिक स्वीकृति प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त बैठक में छात्र निधि कोष की राशि को विद्यार्थीयों के सुविधा विस्तार हेतु समुचित उपयोग पर भी प्रबंध मण्डल द्वारा अनुमोदन किया गया। बैठक में पांच पशु विज्ञान केन्द्रो के लिए स्वीकृत शैक्षणिक पदो के विषयवार विभाजन को भी बैठक में स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक में विश्वविद्यालय के संघटक पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों के लिए भवन, पद व अन्य सुविधाओं के सृजन के लिए राज्य सरकार को प्रस्ताव प्रस्तुत की जाने की अनुशंसा इस बैठक में की गई। बैठक में शैक्षणिक व अशैक्षणिक वर्ग के रिक्त पदों पर चिंता व्यक्त की गई तथा राज्य सरकार से इन पदों की शीघ्र भर्ती हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत करने का अनुमोदन किया गया। बैठक में प्रबन्ध मण्डल की गत बैठक की पालना रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया। विश्वविद्यालय की कुलसचिव बिन्दु खत्री ने बैठक में एजेण्डे प्रस्तुत किये। बैठक में प्रबंध मण्डल के माननीय सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत, निदेशक मत्स्य विभाग श्री प्रेमसुख बिश्नोई, डॉ. अमित नैण, प्रो. जे.बी. फोगाट, श्री अशोक मोदी, श्रीमती कृष्णा सोलंकी, श्री पुरखाराम डूडी, डॉ. एस.एन. पुरोहित, डॉ. विरेन्द्र नैत्रा, डॉ. गीता बेनीवाल, श्री बी.एल. सर्वा, प्रो. ए.पी. सिंह एवं प्रो. राजेश कुमार धूड़िया उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय के 14वें स्थापना दिवस का भव्यता पूर्वक आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के 14वाँ स्थापना दिवस का भव्यता पूर्वक कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग के अध्यक्षता में आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि सभी के परस्पर सहयोग एवं समन्वय से ही किसी संस्था का उत्कृष्ट विकास संभव है। उन्होंने कहा कि हमें संरचनात्मक विकास के साथ–साथ बौद्धिक, भावानात्मक विकास भी करना होगा। हमें समर्पित त्याग, कठिन परिश्रम एवं समय के मूल्य को समझ कर आगे बढ़ाना होगा। प्रो. गर्ग ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के तहत शैक्षणिक विकास के बहुत से द्वार खुल गये है। प्रो. गर्ग ने खुली आँखो से सपने देखने एवं खुद पर विश्वास रखते है सफलता पाने की बात कही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. अरूण कुमार, कुलपति स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर ने विश्वविद्यालय के 14वें स्थापना दिवस की सभी को बधाई देते हुए कहा कि स्थापना दिवस के अवसर पर हमें हमारे उद्देश्यो की पूर्ति एवं भविष्य योजना का आकलन करना चाहिए। प्रो. अरूण कूमार ने पशु खाद्य पदार्थों में मूल्य संवर्धन एवं किसान उत्पादक संघ बनाकर किसानों के आर्थिक उत्थान का सुझाव दिया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. सुरेश कुमार मित्तल, प्रोफेसर परडू यूनिवर्सिटी यू.एस.ए. ने अपने प्रेजेंटेशन के माध्यम से वेटरनरी प्रोफेशन की महत्ता, समाज में योगदान एवं भविष्य की संभावना पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रो. मित्तल ने खाद्य सुरक्षा, संक्रामक बीमारियों की रोकथाम, जैविक कृषि एवं पशुपालन की महत्ता, एकल स्वास्थ्य योजना एवं जैविक प्रतिरोधकता पर वेटरनरियन की महत्ता को समझाया। प्रो. मित्तल ने वेटरनरी प्रोफेशन में महिलाओं की भागीदारी एवं उनके योगदान को भी सराहा। कार्यक्रम के सम्मानीय अतिथि, वेटरनरी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि किसी भी विश्वविद्यालय के प्रगति की पहचान उसके विद्यार्थियों की बेहतर प्रदर्शन से की जा सकती है। विश्वविद्यालय ने 13 साल के अल्प काल में ही आशातीत प्रगति की है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति के तहत विश्वविद्यालय को आज शैक्षणिक एवं शोध का दायरा बढ़ाकर अन्य संस्थाओं के साथ समन्वय बिठाकर कार्य करने की जरूरत है। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. ए.पी. सिंह ने स्वागत उद्बोधन में विश्वविद्यालय के इतिहास के बारे में जानकारी प्रदान की। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने "स्पोकल–23" के दौरान खेलकूद, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक प्रतियोगिता के विजेता टीमों की घोषणा की जिनकों ट्रॉफी एवं प्रशस्ति प्रदान किये गये। निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमन्त दाधीच ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलसचिव बिन्दु खत्री, वित्त नियंत्रक बी.एल. सर्वा, निदेशक एन.आर.सी.सी. प्रो. ए.साहु, सी.एस.डब्लु.आर.आई. के हेड़ प्रो. आर. लेघा, श्रीमती मंजु गर्ग, श्रीमती अरुणा गहलोत, डॉ. पूनम मित्तल विश्वविद्यालय के डीन–डारेक्टर, विभागाध्यक्ष शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक कर्मचारी, पूर्व शिक्षक एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय के जन सम्पर्क प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया द्वारा तैयार "यूनिवर्सिटी ट्वीटर हेड़ल" का विमोचन किया गया। सहायक प्रध्यापक सुरेश कुमार झीरवाल द्वारा लिखित पुस्तिका "केटरेक्ट सर्जरी इन डॉग" जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण केन्द्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया एवं डॉ. मनोहर सेन व डॉ. देवेन्द्र चौधरी द्वारा लिखित "प्रशिक्षण मेन्युवल" का विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया।

बायोमेडिकल वेस्ट के प्रबंधन और निस्तारण पर जागरूकता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास द्वारा 6 मई को राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय सूरसागर, बीकानेर में एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने "वन हैल्थ" विषय के बारे में छात्राओं को अवगत करवाया तथा पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाले संक्रामक रोगों के बारे में जानकारी दी। डॉ. मनोहर सैन व डॉ. देवेन्द्र चौधरी ने बायोमेडिकल वेस्ट के उचित निस्तारण एवं प्रबन्धन के नियमों व विधियों के बारे में अवगत करवाया। कार्यक्रम के दौरान भास्कर वैष्णव, रणवीर गोदारा एवं स्कूल के अध्यापक रामरख बाना उपस्थित रहे।

जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के निस्तारण पर जागरूकता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास द्वारा 16 मई को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सर्वोदय बस्ती, बीकानेर में छात्र–छात्राओं हेतु अपशिष्ट निस्तारण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि जैविकीय अपशिष्ट जो कि अस्पतालों में मानव व पशुओं के उपचार के दौरान निकलता है, जिससे कई प्रकार की संक्रामक बीमारियों का खतरा बना रहता है और वातावरण भी दूषित होता है। इसका उचित निस्तारण एवं प्रबंधन अति आवश्यक है। डॉ. धूड़िया ने विद्यार्थियों को स्वयं की एवं वातावरण की स्वच्छता के बारे में जानकारी भी दी। कार्यक्रम में केन्द्र के टीचिंग एसोशिएट डॉ. देवेन्द्र चौधरी ने जैव अपशिष्ट के पृथक्करण, भंडारण, प्रबंधन एवं निस्तारण विषय पर व्याख्यान दिये। कार्यक्रम में डॉ. रणवीर गोदारा, प्रधानाचार्य, राकेश मेघवाल, वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक एकलव्य बिश्नोई व अन्य शिक्षकगण उपस्थित रहे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढवाला में आपदा प्रबंधन पर प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढवाला के पंचायत भवन में 12 मई को आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि शिविर में केन्द्र के विशेषज्ञ शैलेन्द्र सिंह शेखावत ने केटल फायर सेफ्टी हट मॉडल को प्रदर्शित कर अग्नि जनित हादसों के दौरान पशुधन के बचाव एवं राहत के विभिन्न व्यवस्थाओं की जानकारी प्रदान की। डॉ. सोहेल ने केन्द्र की विभिन्न तकनीकों की जानकारी बतायी। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने प्रशिक्षार्थियों को संबोधित कर विश्वविद्यालय के द्वारा पशुपालन के क्षेत्र में किये गए विभिन्न नवाचारों को अपनाने के लिए पशुपालकों को प्ररित किया एवं उनका मनोबल बढ़ाया।

अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर जागरूकता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र, बीकानेर द्वारा 22 मई को अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस–2023 के अवसर पर गांव गाढ़वाला एवं वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर कैंपस में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रभारी डॉ. मोहनलाल चौधरी ने बताया कि गांव गाढ़वाला के पशुपालकों को पशु जैव विविधता को महत्व, उपयोगिता एवं संरक्षण के बारे में विस्तार से बताया गया। पशुपालकों को "जैव विविधता एक परिचय" पुस्तिका एवं खनिज लवण के पैकेट्स का वितरण भी किया गया तथा जैव विविधता एवं संरक्षण संबंधित चर्चा कर उनकी शंकाओं का समाधान किया गया। इस अवसर पर पक्षियों को भीषण गर्मी के प्रकोप से बचाने के लिए पशुपालकों को पानी पीने के परिंडों का वितरण किया गया तथा वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर कैंपस में भी विभिन्न स्थानों पर पक्षियों हेतु पानी पीने के परिंडे लगाए गये। कार्यक्रम में गाढ़वाला के 32 पशुपालकों ने शिरकत की एवं सरपंच प्रतिनिधि मोहन सारण भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के आयोजन में डॉ. अरूण कुमार झीरवाल, डॉ. नरसी राम गुर्जर, डॉ. भानू एवं डॉ. मृणालिनी सारण का सहयोग रहा।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जून, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
बबेसिओसिस	गाय	सवाईमाधोपुर	–	–	–
लंगडा बुखार	गाय, भैंस	–	–	–	भीलवाड़ा
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	गंगानगर, जयपुर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जैसलमेर	–	–	–
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	–	–	–	अलवर, जैसलमेर, सीकर
पी.पी.आर.	बकरी	चूरू	करौली		अजमेर, बारां, बाड़मेर, बीकानेर, जैसलमेर, जालौर, झुंझुनू, जोधपुर, सिरोही
माता रोग	भेड़, बकरी	–	–	–	जयपुर
थीलेरिओसिस	गाय	–	–	–	बाड़मेर, राजसमंद, सिरोही
लम्पी स्किन रोग	गाय	–	–	–	बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, पाली, अजमेर, भीलवाड़ा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं
डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 2, 3, 5, 6, 9, 10 एवं 11 मई को गांव सहनाली बड़ी, जोड़ी, भैरूसर, खण्डवाताल, रिड़कला, रामपुरा एवं रिबीया गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 160 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 4, 9, 16, एवं 24 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 12, 18 एवं 20 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 212 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 17, 18, 20, 23 एवं 27 मई को गांव अभोरा, सुनारी, सुरौता, अवार एवं सजौला गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 94 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा दिनांक 9, 12 एवं 16 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 110 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 4, 6, 10, 16, 19 एवं 27 मई को गांव दोनारी, हवेली नगला, लुधपुरा, दुल्हेरा, भोडिया एवं जयेरा का पुरा गांवों में तथा 12 एवं 24 मई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 238 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6, 9, 12 एवं 16 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर दिनांक 18 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 165 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 27 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण एवं 18 मई को गांव पीपलकी में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 29 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 9, 19 एवं 24 मई को गांव धाकड–खेड़ी, कैथून, किशनपुरा एवं खेड़ा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 102 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 8, 10, 12, 17 एवं 19 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा दिनांक 30 मई को गांव सोतवाड़ा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 141 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 9, 16, 24 एवं 30 मई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा दिनांक 12 मई को गांव गणेशपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 125 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 8, 12, 17, 20, 24, 27 एवं 29 मई को गांव भोजपुरा, भैंसावा, जोरपुरा, आईदान का बास, रामला का बास, खेजड़वास एवं डूंगरी कला में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 160 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 4, 16, एवं 26 मई को गांव रामगढ़, फेफाना एवं रतनपुरा गांवो में एक दिवसीय एवं 9–12 एवं 18–24 मई को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय एवं सात दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 148 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुओं में थीलेरियोसिस : बचाव एवं उपचार

दुधारू पशुओं को हानि पहुंचाने वाले रोगों में से एक रोग है थीलेरियोसिस। यह रोग गाय–भैंस में मुख्यतया थीलेरिया एनूलाटा एवं भेड़–बकरी में थीलेरिया ओविस नामक रक्त में पाये जाने वाले परजीवी से होता है। कम उम्र के बछड़े इस रोग के प्रति अत्यधिक सवेंदनशील होते है। इस रोग का प्रकोप ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में अधिक होता है, क्योंकि इस मौसम में रोग संचरण करने वाली किलनियों की संख्या में वृद्धि अधिक होती है क्योंकि उच्च तापमान एवं आर्द्रता किलनियों की वृद्धि के लिए अच्छा वातावरण प्रदान करते हैं। अतः समय रहते इस रोग का उचित उपचार होना अति–आवश्यक है अन्यथा 90 प्रतिशत पशुओं की मृत्यु हो जाती है। इस रोग का फैलाव गाय–भैंसों व बछड़ों में खून चूसने वाली किलनी हाइलोमा एनालोटिकम द्वारा होता है।

रोग के लक्षण :

- ❖ इस रोग से प्रभावित पशु में लगातार बहुत ज्यादा बुखार रहता है।
- ❖ स्केपूला के बगल वाले लिम्फ नोड (लसिका ग्रंथि) में सूजन आ जाती है जो स्पष्ट रूप से दिखती है।
- ❖ हृदय गति एवं श्वसन गति बढ़ जाती है।
- ❖ नाक से पानी, आंखो से स्त्राव एवं खांसी आने लगती है।
- ❖ रोगग्रस्त पशु के शरीर में खून की कमी हो जाती है।
- ❖ भूख नहीं लगने के कारण पशु खाना–पीना कम कर देता है, जिसकी वजह से पशु अत्यधिक कमजोर हो जाता है।
- ❖ दुधारू पशु के दुग्ध उत्पादन में गिरावट होने लगती है।
- ❖ कुछ समय पश्चात् बुखार कम होने के साथ–साथ पशु में पीलिया के लक्षण दिखाई देने लगते है जिसकी वजह से पशु का मूत्र भी पीला हो जाता है।
- ❖ कभी–कभी संक्रमित पशु को खूनी दस्त भी लगने लगती है।
- ❖ उचित उपचार न मिलने पर संक्रमित पशु की मृत्यु भी हो जाती है एवं मृत्यु दर गर्भवती गायों में सबसे अधिक होती है।

रोग की पहचान एवं जांच :

- ➢ इस रोग की पहचान प्रमुख लक्षणों (स्केपूला के बगल वाले लिम्फ नोड में सूजन) के आधार पर की जाती है।
- ➢ इसके अलावा आसपास के क्षेत्र में किलनियों का पाया जाना भी इस रोग का कारण है।
- ➢ विशिष्ट जांच के लिए खून के पतले क्लीयर एवं लिम्फ नोड्स व यकृत की बायोप्सी की जानी चाहिए जिससे परजीवी की उपस्थिति का पता लगाया जा सके।
- ➢ इसके अलावा पी.सी.आर एवं सी.एफ.टी. द्वारा भी इस रोग की जांच की जा सकती है।

रोग का उपचार :

- ❖ थीलेरियोसिस रोग के इलाज हेतु बुपारवाकियोनोन दवा का प्रयोग पशुचिकित्सक की देखरेख में करना चाहिए।
- ❖ एनीमिया की स्थिति में आयरन के टीके लगाना उचित रहेगा।

रोग का नियंत्रण एवं रोकथाम :

- ❖ इस रोग से बचाव हेतु रक्षावैक–टी टीका (3 मिली) 2 वर्ष के ऊपर के गाय व गाय के बछड़ों के गर्दन में त्वचा के नीचे लगवाना चाहिए तथा इस रोग की पूर्ण रोकथाम के लिए प्रतिवर्ष इस टीके को लगवाना चाहिए। यह टीका ब्याहने वाली गायों को नहीं लगाते है।
- ❖ किलनियों के नियंत्रण के लिए 10 प्रतिशत साइपरमैथरीन स्प्रे से पशु के शरीर पर छिड़काव करना चाहिए तथा आइवरमैक्टीन इंजेक्शन 0.2 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम की दर से पशु को दिया जाना चाहिए।
- ❖ इसके अलावा पशु के आवास स्थल को चूने एवं कीटनाशक से धोना चाहिए तथा आवास स्थल की चूने से पुताई करनी चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

कोटा के अजेसपाल गुर्जर पशुपालन से हुए समृद्ध

प्रगतिशील पशुपालक श्री अजेसपाल गुर्जर, निवासी, रोझडी, तहसील–लाडपुरा, जिला–कोटा द्वारा पशुपालन व्यवसाय को करते हुए लगभग दस वर्ष हो गये। इनके पास दस बीघा कृषि भूमि है शुरूआत मे इनके पास 10 पशु थे, लेकिन इनकी रूचि पशुपालन को एक व्यवसाय के रूप में अपनाने की थी। वर्तमान मे अपने दो भाइयों के साथ पशुपालन व्यवसाय को यर्थात के धरातल पर सफलतापूर्वक अपनाते हुए कुल 80 पशुओं के साथ पशुपालन को एक सफल व्यवसाय के रूप मे आगे बढ़ा रहे है। इनका मानना है कि वे पशुपालक जिनके पास कम कृषि भूमि हो वो भी पशुपालन व्यवसाय को वृहद् स्तर पर ले जा सकते है। इनके पास 80 उन्नत नस्ल के पशु है जिनमें 40 भैंसें (मुर्रा नस्ल) और 15 गायें (गिर व जर्सी) हैं एंव 15 छोटे पशु है। इनके यंहा प्रतिदिन लगभग 230 लीटर दुग्ध उत्पादन होता है। इनकी पशुपालन से वार्षिक आय लगभग आठ लाख रूपये तक हो जाती है। इन्होने पशुओ के लिए दो पक्की पशुशाला भी बना रखी है जिसमे टीन शेड व पंखो की सुविधा भी उपलब्ध है। श्री अजेसपाल ने पशुओ की देखभाल के लिए दो स्थानीय लोगो को रोजगार भी प्रदान कर रखा है। पशुओं के लिए हरा चारा वर्ष भर सामान्यतः उपलब्ध रहता है आवश्यकतानुसार बाजार से भी खरीद कर लाते है। इन्होने उन्नत नस्ल के दो पाडे रखे हुए है एंव आवश्कतानुसार अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान तकनीक को भी अपनाते है। पशुओं में होने वाली संक्रमाक बीमारियों से अपने पशुओं को बचाने के लिए हर छह माह मे टीकाकरण भी करवाते है। प्राथमिक पशुचिकित्सा हेतु दवाइयां अपने पास रखते है, जिनका उपयोग पशुचिकित्सक की सलाह से स्वंय कर लेते है एंव आवश्यक होने पर पशुचिकित्सक की सेंवाऐं भी लेते है। पशु विज्ञान केंद्र, कोटा द्वारा रोझडी गांव में आयोजित पशुपालक प्रशिक्षण शिविर मे भी भागीदारी निभाई है और केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा इनको समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीको की जानकारी दी जाती है। ये कृमिनाशक दवा, खनिज लवण मिश्रण, टीकाकरण, पशुओ मे नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान तकनीक एंव संतुलित पशु आहार आदि को पशुओ के लिए उपयोग मे लेते है एंव जो जानकारी इनके पास है उसको अन्य पशुपालको को भी साझा करते है। श्री अजेसपाल एंव सम्पूर्ण परिवार पशुपालन को अपनाने से आर्थिक रूप से सुदृढ होने के साथ ही खुशहाल जीवन जी रहे है। श्री अजेसपाल अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के सदस्यों के साथ–साथ पशु विज्ञान केंद्र, कोटा को भी देते है।

सम्पर्क- अजेसपाल गुर्जर
ग्राम रोझड़ी, तहसील लाड़पुरा, जिला कोटा (मो.8890773358)

स्टेम कोशिका तकनीक द्वारा त्वचा सम्बन्धी बीमारियों का उपचार

सामान्यतः पालतू जानवर विभिन्न त्वचा समस्याओं से पीड़ित होते हैं, कुछ का इलाज आसान होता है लेकिन कुछ त्वचा समस्याऐं अधिक जटिल होती हैं, जो पशुओं की उत्पादकता और शारीरिक विश्राम को प्रभावित करती हैं और किसान को आर्थिक नुकसान पहुंचाती हैं। इसलिए नुकसान को कम करने के लिए जानवरों के त्वचा रोगों को जल्द से जल्द ठीक करना बहुत जरूरी है। त्वचा विभिन्न बाहरी एजेंटों के खिलाफ एक सुरक्षात्मक आवरण के रूप में अपने महत्वपूर्ण कार्यों के कारण शरीर में सबसे महत्वपूर्ण अंगों में से एक है और तापमान नियामक के रूप में भी काम करती है। यह तीन परतों से बना होती हैः एपिडर्मिस, डर्मिस और हाइपोडर्मिस। त्वचा की सामान्य संरचना में कोई चोट या कोई विकार, जिसके कारण शरीर के ऊतकों में संयोजन का नुकसान हो सकता है जिसे घाव कहा जाता है। घाव भरने और मरम्मत में समय एक महत्वपूर्ण पैरामीटर है और ऐसी कई रिपोर्टें हैं जो बताती हैं कि स्टेम सेल के साथ त्वचा के घाव का उपचार क्षतिग्रस्त ऊतक या घाव के उपचार के समय को सामान्य उपचार की तुलना में कम कर देता है, जो त्वचा रोगों के उपचार के लिए एक आशाजनक अवसर प्रदान करता है।

त्वचीय घाव की मरम्मत की प्रक्रिया : चिकित्सकीय रूप से घावों को दो समूहों तीव्र समूह और जीर्ण समूह में विभाजित किया जाता है। त्वचा पर कोई भी चोट जो समय के बजाय अचानक होती है, जो कोमल ऊतकों की अखंडता को नुकसान पहुंचाती है, तीव्र घाव के रूप में जानी जाती है। घाव, जो विभिन्न यांत्रिक या पर्यावरणीय क्षति जैसे अत्यधिक उच्च तापमान परिवर्तन, रसायनों के संपर्क और विकिरण के कारण होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप शरीर में जीव का प्रवेश होता है और संक्रमण होता है, पुराने घावों के रूप में जाना जाता है। तीव्र घावों के विपरीत, लंबे समय तक रोग संबंधी सूजन के कारण पुराने घावों का उपचार धीमा हो जाता है, जबकि उपचार की प्रक्रिया दोनों प्रकारों में समान होती है। घाव की मरम्मत शरीर में एक जटिल जैविक प्रक्रिया है, जो सभी ऊतकों और अंगों में होती है। मरम्मत की प्रक्रिया चोट के प्रकार पर निर्भर करती है। त्वचा के घाव की मरम्मत एक अत्यधिक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें एपिडर्मल और त्वचीय कोशिकाओं के बीच बातचीत, नियंत्रित एंजियोजेनेसिस, बाह्य मैट्रिक्स और प्लाज्मा–व्युत्पन्न प्रोटीन शामिल हैं। इसमें तीन चरण होते हैंः सूजन, प्रसार और ऊतक रीमॉडेलिंग। सूजन पहला चरण है जो ऊतक क्षति के तुरंत बाद होता है, और इस चरण की प्रमुख विशेषता संक्रमण को रोकना है। विपरीत प्रतिक्रिया (काउंटर रिएक्शन) प्लेटलेट–व्युत्पन्न वृद्धि कारक (पीडीजीएफ), परिवर्तन कारक (टीजीएफ–β), फाइब्रोब्लास्ट वृद्धि कारक (एफजीएफ) और एपिडर्मल वृद्धि कारक (ईजीएफ) जैसे साइटोकिन्स की रिहाई के साथ शुरू होती है। ऊतक की मरम्मत का प्रसार चरण त्वचा/ऊतक क्षति के लगभग 2–10 दिनों के बाद शुरू होता है और यह विभिन्न प्रकार की कोशिकाओं के बीच बातचीत के माध्यम से निर्धारित होता है। सबसे पहले, केराटिनोसाइट्स घायल डर्मिस में आते हैं और फिर एंजियोजेनेसिस होता है। एंजियोजेनेसिस के दौरान, फाइब्रोब्लास्ट और मैक्रोफेज फाइब्रिन क्लॉट की जगह लेते हैं। अंतिम चरण (रीमॉडेलिंग) में, फाइब्रोब्लास्ट और मैक्रोफेज मायोफिब्रोब्लास्ट में बदल जाते हैं। इस मायोफिब्रोब्लास्ट्स को सिकुड़ा हुआ कोशिकाओं के रूप में वर्गीकृत किया जाता है और घाव को बंद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रीमॉडेलिंग चरण का मुख्य उद्देश्य नए उपकला का विस्तार करना और अनावश्यक रक्त वाहिकाओं, फाइब्रोब्लास्ट और सूजन कोशिकाओं के एपोप्टोसिस का विस्तार करना है, जिसके परिणामस्वरूप घाव की परिपक्वता होती है।

क्या है स्टेम सेल : स्टेम सेल अप्रतिबद्ध, अविभाजित और स्व–नवीकरणीय कोशिका का प्रकार हैं जो उपास्थि, हड्डी, मांसपेशियों और वसा ऊतकों और कई अन्य कोशिका / ऊतक प्रकारों सहित विभिन्न कोशिका वंशों को जन्म दे सकते हैं। भ्रूण स्टेम कोशिका, प्रेरित प्लुरिपोटेंट स्टेम सेल (आईपीएस), और वयस्क स्टेम सेल सहित कई प्रकार के स्टेम सेल हैं। विभिन्न अध्ययनों में बताया गया है कि शरीर के प्रत्येक अंग या ऊतक में वयस्क स्टेम कोशिकाएँ होती हैं। विभिन्न प्रकार के वयस्क स्टेम सेल में, मेसेनकाइमल स्टेम सेल और वसा–व्युत्पन्न स्ट्रोमल सेल ऊतक पुनर्जनन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मेसेनकाइमल स्टेम सेल में अस्थि मज्जा से घायल स्थल पर प्रवास करने और कार्यात्मक त्वचा कोशिका में अंतर करने की क्षमता होती है। इसके अलावा, मेसेनकाइमल स्टेम सेल घुलनशील कारकों का स्राव करता है जो सेलुलर प्रतिक्रियाओं, एंजियोजेनेसिस गठन और ऊतक रीमॉडेलिंग को विनियमित करते हैं और घाव भरने की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिसमें सूजन, प्रसार, संकुचन और रीमॉडेलिंग शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, मेसेनकाइमल स्टेम सेल में रोगाणुरोधी गतिविधि होती है जो घाव के संक्रमण को रोकती है। इसलिए मेसेनकाइमल स्टेम सेल की यह चिकित्सीय क्षमता उन्हें पुराने घावों के उपचार के लिए एक आकर्षक विकल्प बनाती है। मेसेनकाइमल स्टेम सेल को अस्थि मज्जा, वसा ऊतक, एमनियोटिक द्रव और डर्मिस जैसी विभिन्न स्थानों से अलग किया जा सकता है और पुनर्योजी दवा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके अलावा एमएससी विभिन्न प्रतिरक्षा कोशिकाओं जैसे प्राकृतिक मारक (एनके) कोशिकाओं, टी–कोशिकाओं, बी–कोशिकाओं और मैक्रोफेज के साथ क्रिया कर सकती हैं। मेसेनकाइमल स्टेम सेल द्वारा प्रतिरक्षा–दमन हर समय सक्रिय नहीं होता है और यह मारक उत्तेजना के प्रकार और ताकत पर निर्भर करता है। फ़ाइब्रोब्लास्ट वृद्धि कारक और संवहनी एंडोथेलियल वृद्धि कारक जैसे प्रसार, विभेदन, और वृद्धि कारक उत्पादन की बढ़ी हुई दर को उत्तेजित करके मैट्रिक्स जमाव और रक्त वाहिका निर्माण जैसे घाव भरने की घटनाओं में मदद करते हैं। तो ये सभी गुण मेसेनकाइमल स्टेम सेल को घाव भरने के लिए सबसे अच्छा विकल्प बनाती हैं।

निष्कर्ष : पशुओं के चर्म रोग या घाव पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता को कम कर देते हैं जिससे पशुपालक को आर्थिक नुकसान होता है। पुराने घावों के सामान्य उपचार में अधिक समय लगता है और कुछ समय इलाज योग्य नहीं होता है। इसलिए मेसेनकाइमल स्टेम सेल का पुनर्योजी दवा के रूप में उपयोग घरेलू पशुओं में त्वचा रोगों के उपचार के लिए एक आशाजनक अवसर प्रदान करता है।

डॉ. अवनि सिंह, डॉ. पवन कुमार मित्तल, डॉ. प्राची ढ़ाका,
डॉ. गोविन्द सहाय गौतम एवं डॉ. बरखा गुप्ता
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर।

निदेशक की कलम से...

पशुपालन से अतिरिक्त आय हेतु कौशल विकास जरूरी

पशुपालन एक कृषि सम्बद्ध गतिविधि है। यह सामाजिक न्याय, गरीबी उन्मूलन, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राजस्थान जैसे विशाल भू–भाग वाला प्रदेश जहां अधिकतर इलाका सुखा है और मुख्यतः वर्षा आधारित खेती है, किसानों व पशुपालकों के लिए पशुधन ही आर्थिक प्रगति का मूल आधार है। पशुपालन न केवल पशुपालकों की नियमित आमदनी में सहयोग करता है अपितु प्राकृतिक आपदाओं में सर्वोतम वित्तीय सुरक्षा भी प्रदान करता है। पशुपालन सेक्टर आजीविका का सबसे सुलभ, सरल व नियमित आय का जरिया है। मुख्य रूप से भूमिहीन और सीमान्त कृषकों के लिए पारिवारिक आय का मुख्य स्त्रोत है। पशुपालन क्षेत्र में अपार संभावनाएं है, क्योंकि राजस्थान राज्य पशुधन सम्पदा में देश में अव्वल स्थान पर है तथा राजस्थान दुग्ध उत्पादन में भी देश में प्रथम स्थान पर है। बेरोजगारी से निपटने तथा आजीविका के वैकल्पिक उपायों के लिए कौशल विकास के कार्यक्रम और प्रशिक्षण महत्वपूर्ण होते हैं। शैक्षणिक योग्यता का होना पर्याप्त नही है, क्योंकि कौशल विकास अब समाज की जरूरत बन गया है। युवाओं को पशुपालन से सम्बद्ध उद्यमिता विकास से अधिक आय अर्जित करने का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। प्रदेश में पशुधन की अपार संख्या व गुणवत्ता के आधार पर राज्य व केन्द्र सरकार द्वारा इस क्षेत्र में कौशल विकास के कई कार्यक्रम प्रारम्भ किये हैं। कौशल विकास कार्यक्रमों से युवा अपनी क्षमता निर्माण करके स्वःरोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेगें। विश्वविद्यालय भी अपने पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से कौशल विकास के कार्यक्रम पशुपालकों व किसानों के लिए समय–समय पर आयोजित करता है। राजुवास किसानों, पशुपालकों और बेरोजगार युवाओं को कौशल विकास के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए आवश्यक विशेषज्ञ सेवाएं सुलभ करवाने के लिए संकल्पबद्ध है। इन कार्यक्रमों द्वारा किसानों और पशुपालकों को उन्नत पशुपालन, जैविक पशुपालन, पशुपालन में मूल्य संवर्द्धन, कृत्रिम गर्भाधान, पशुओं में संक्रामक मौसमी बीमारियों से बचाव व पशुपोषण विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किये जाते हैं। हमें पशुपालन के क्षेत्र में कौशल विकास व दक्षता संवर्द्धन के लक्ष्य–पथ पर अग्रसर होने के लिए मिलकर प्रयास करने होगें जिससे पशुपालकों की आजीविका में सुधार के साथ–साथ आय दुगुनी करने में मदद मिलेगी। आप सभी को विश्व दुग्ध दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं व बधाई।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/ विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।